Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

प्राचीन भारत के साहित्य के विकास में महिलाओं के योगदान का अध्ययन

जय प्रकाश यादव (असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, इतिहास)
Dr. B. R. Ambedkar
Government Degree College Audenya Padariya Mainpuri, Uttar Pradesh, India

Article Info

Accepted : 10 Jan 2025
Published : 29 Jan 2025

Publication Issue :
January-February-2025
Volume 8, Issue 1

Page Number : 16-21

शोध सारांश:

किसी भी समाज के उत्थान के लिए महिला पुरुष दोनों को मिलकर कार्य करना चाहिए। गाँधी जी ने कहा था कि "जिस समाज की आधी आबादी खाली बैठी रहेगी तो उस समाज का उत्थान कैसे सम्भव हो सकता है।" इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि "समाजरूपी गरुड़ के महिला और पुरुष दो पंख होते हैं। यदि एक पंक्ष सबल तथा दूसरा दुर्बल हो तो उसमें गगन को छूने की शक्ति कैसे निर्मित होगी।" विश्व के किसी भी राष्ट्र की संस्कृति का मापदण्ड या सृष्टि का मेरुदण्ड महिलाओं को ही माना गया है। भारत का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन प्राचीन काल से ही वैभवपूर्ण रहा है. जिसे बनाने में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करके समाज के उत्थान के लिए कार्य करती थी, उन्हें संहिताओं में बहवृची (संहिताओं के अधिकाधिक मन्त्रों की पण्डिता), अपिशाला (अपिशलि के व्याकरण की अध्ययनकत्री), कठी (कठशाखा का अध्ययन करने वाली) इत्यादि कहा गया है। वह वेदों को जानने वाली होती थी, ऋग्वेद में उन्हें 'चतुष्कोण वेदों की निर्माण प्रक्रिया अर्थात यज्ञ के गूढ़ ज्ञान को समझने वाली कहा है। महिलाएँ वैदिक शिखा के साथ युद्धविद्या, परा एवं अपरा विधाएँ, गणित, शिल्प, गीत, संगीत, नृत्य आदि की शिक्षा लेकर समाज में पुरुषों के समान कार्य करती थी। बुद्धिमती तथा विद्वान कन्या माता-पिता के लिए आदर्श मानी जाती थी। ऋग्वेद में घोषा एवं बप्रिमती को प्रभूत बुद्धिशालिनी कहा जाता है, समाज में बुद्धिमती कन्या को उचित सम्मान प्रदान था।

मुख्य शब्द : साहित्य, पंडिता, शिक्षक, शब्दकोश, शैलियाँ, थेरीगाथा, मंत्रदृष्टि, विदुषी आदि।

अध्ययन के उद्देश्य:-

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य, प्राचीन भारतीय समाज में जो साहित्यिक विकास हुआ, उसमें महिलाओं के योगदान का विश्लेषण करना है।

अध्ययन की विधिः-

प्रस्तुत शोध लेख ऐतिहासिक विश्लेषण है। इसीलिए यह द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है, जिसे विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं से संकलित किया गया है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

वैदिक काल:-

वैदिक काल में अनेक महिलाओं ने ऋग्वेद में ऋचाओं को लिखा उन्हें मन्नद्रष्टा, विदुषी व ऋषिका कहा जाता है। महिलाओं को शिक्षा सम्वन्धी असीम अधिकार प्राप्त थे, दो प्रकार की महिलाएँ थी. एक 'सघोवाह' जो ब्रह्मचर्य आश्रम पर्यन्त अर्थात् विवाह के पूर्व तक विद्या ग्रहण करने व वेदाध्ययन करने के लिए अधिकृत थी। यह विवाह के बाद विभिन्न प्रकार के धार्मिक संस्कार एवं पूजा-पाठ आदि करती थी। दूसरी 'ब्रह्मवादिनी' थी जो शिक्षा के सर्वोच्च शिखर पर जाने हेतु स्वतन्त्र थीं। यह महिलाएँ वैदिक ऋचाओं का अध्ययन करती साथ ही मन्त्र दर्शन, मीमांसा, ऋचा-सृजन करके समाज के गूढ़ विषयों को सरल करने में योगदान देती थी। उस समय अनेक मन्त्राद्रष्टा महिलाएँ हुई जैसे-लोपामुद्रा, अदिति, सावित्री, इन्द्राणी, सिकता, रोमशा, सूर्या, आगिसी, जुहू, घोषा, काक्षीवती, श्रध्दा, दक्षिणा, पौलोमी, वाक, आम्भूणी, कामायनी, शची आदि।

विश्ववारा ने ऋग्वेद के पंचम मण्डल के 58 वें सूक्त की रचना की, यह सूक्त छः चरणों में है जिसमें अग्नि देवता की प्रशंसा की गई है। ऋग्वेद का पंचम् मण्डल ऐत्रेयी मण्डल के नाम से जाना जाता है, क्योंकि विश्ववारा इसी कुल की थी। अपाला ने ऋग्वेद के आठवें मण्डल के 9 वें सूक्त की रचना की यह सूक्त सात चरणों में विभक्त है, तथा इन्द्र देवता को समर्पित है। घोषा काक्षीवती ने ऋग्वेद के दशम मण्डल के 39-40 सूक्त की रचना की थी. उन्होंने ही अगस्त्य ऋषि के साथ स्तुतिगान की रचना की थी। इन्द्राणी (इन्द्र की पत्नी) ने ऋग्वेद के दशम मण्डल के अट्ठाइसवें स्तुतिगान के पहले श्लोक को व्याख्या व रचना की थी, उन्होंने दशम मण्डल के ,86 वें स्तुतिगान के 2.4.7. 9. 10. 15. 18. 22 और 23 वें श्लोकों की व्याख्या की थी। रोमशा, सवोनया राजा की पुत्री थी, उन्होंने अति सुन्दर शुद्ध वाक्यालंकार में श्लोकों की रचना की थी। उवंशी 2.5.7.9.11.13. 15 व 18 वे श्लोंको की व्याख्या तथा दृष्टा थी। सविता की पुत्री सूर्या बड़ी ही विदुषी महिला थी, उन्होंने सोम के साथ अपने विवाह का वर्णन किया, यह स्तुतिगान 47 श्लोकों में लिखा गया है। शिक्षित महिलाएँ आचार्या, उपाध्याया, उपाध्यायी आदि भी बनती थी।

ऋग्वेद के एक सूक्त में पौलोमी शची द्वारा अपने मनोभाव प्रकट करती हैं- "मैं ज्ञानवती हूँ मैं मूर्धन्य हूँ मै तेजस्वी करने वाली हूँ, मैं रात्रु का विनाश करने वाली हूँ, पति मेरे अनुकूल रहकर व्यवहार करें, मेरे पुत्र शत्रुओं का विनाश करने वाले हैं, मेरी पुत्री तेजस्वी है, मैं सर्वत्र विजयी हूँ. मेरी प्रशंसा पति के विषय में है या मैं सदा अपने पति की प्रशंसा करती हूँ। महिलाएँ यज्ञोपवती संस्कार भी कराती थी वह उपनयन संस्कार के बाद गुरु के पास रहकर शिक्षा प्रप्त करती थी। जो विदुषियाँ अविवाहित रहती थी उन्हें 'आमाजू' कहा जाता था। यजुर्वेद में वर्णित है कि "एक युवा कन्या जो अपना ब्रह्मचर्य पूर्ण कर चुकी हो तभी उसका विवाह एक ऐसे वर से करना चाहिए जो कि उसकी विद्धता से प्रसन चित हो। विद्या प्राप्त करने वाली दो प्रकार की स्त्रियों होती थी, सद्योवधू व ब्राह्मवादिनी। सधोवधू का उपनयन विवाह के समय ही हो जाता था, वह उच्च शिक्षा में रूचि नहीं लेती थी। समाज परिवार तथा पति को समृद्ध करने में अपना जीवन विताती कात्यानी ऐसी ही थी। वहीं ब्रह्मवादिनी आजीवन शिक्षा, ज्ञान प्राप्त करने में जीवन जीती थी। ऋषि कुशध्वज की कन्या वेदवंती ऐसी ही ब्रहावादिनी स्त्री थी। ऐसी महिलाएं बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न होती थी, जो ज्ञान और बुद्धि में पारंगत ही नहीं बल्कि अनेक मंत्रों की उद्गात्री होती थी। कायाकृत्स्नी नामक स्त्री ने मीमांसा जैसे क्लिष्ट और गूढ़ विषय पर अत्याधिक बहुचर्चित पुस्तक का प्रणयन किया था जो बाद में उसी के नाम से विख्यात हुई। इस वर्ग के अध्येता 'कश्कृत्स्नी' कहे गए। महिलाएँ दर्शन जैसे गम्भीर व गूढ़ विषय में भी पारंगत होती थी, याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी विख्यात दार्शनिका थी उनकी रूचि सांसारिक अलंकारों तथा वस्तुओं में नहीं थी, बल्कि उनकी रूचि दर्शनशास्त्र में थी। इसी प्रकार राजा जनक के दरबार में गोष्ठी हुई थी, जिसमें गार्गी ने अपनी अद्भूत तर्कशक्ति से याज्ञवल्क्य जैसे महर्षि को चौका दिया था, तथा अपनी पृच्छाओं से उन्हें ही नहीं बल्कि पूरे विद्वान समाज को स्तब्ध कर दिया, याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार "मैत्रेयी ने बाल्मीकि एवं अगस्त्य जैसे ब्रह्मचारियों से वेदान्त की शिक्षा प्राप्त की थी। रामायण के अनुसार "कौशल्या व तारा दोनों भी मंत्रविद थी सोता भी नित्य वैदिक प्रार्थनाएँ किया करती थीं।" रामायण से ही सूचना मिलती है कि

अत्रेयी ने बाल्मीकि आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण की थी। महाभारत में वर्णन मिलता है कि द्रौपदी भी एक पंडिता थी। उत्तरवैदिक काल में अनेक महिलाएँ शिक्षिका व अध्यापिकाओं का जीवन व्यतीत करती थी, ऐसी स्त्रियां उपाध्याएं कहीं जाती थी। वायु पुराण में वर्णित है-कि महिलाओं की शिक्षा के ही रूप थे, एक आध्यात्मिक और दूसरा व्यावहारिक किन्तु आध्यात्मिक ज्ञान को ज्ञाता अपर्णा, वृहस्पति, भागिनी, भुवन, मेनाधारिणी, सतरूपा, संनति, एकपाटला, एकपूर्णा आदि विदुषी महिलाएँ थी। विष्णु पुराण के अनुसार धर्मश्रता, उमा पीवरी ऐसी महिलाओं ने योग व तप के बल पर योग्य पति प्राप्त किया था।' गार्गी एक अध्ययरत विदुषी न थी, वरन वह अध्यापन कार्य भी करती थी, गार्गी व सुलभा वैदिक ज्ञान की पण्डिता थी। वह जो भी शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करती थी, उसे तात्कालीन समाज को दे दिया करती थी, जिससे समाज का उत्थान हो सके।

उत्तरवैदिक काल में महिलाएँ वैदिक शिक्षा जानने व समाज में प्रसार करने के साथ-साथ नृत्य गान व चित्र कला में भी अपनी भूमिका निभा सकी थी, रामायण में महिलाओं के नृत्य, गान व संगीत के विभिन्न साक्ष्य मिलते है. त्रिपुर की महिलाएँ अपनी भाव-भंगिमाओं से लोगों को प्रफुल्लित कर आकर्षण का वातावरण निर्मित करती थी। विष्णु पुराण के अनुसार "बाणासुर के मंत्री कुष्मांड की पुत्री की सखी चित्ररेखा ने चित्रपट पर विभिन्न देवताओं, गंधेवों और मानव की आकृतियां बनाई थी जिसमें अनिरुद्ध देवता का भी चिंताकर्षण चित्र बना था।

मौर्यकाल:-

बौद्ध काल में महिलाएँ प्रायः शिक्षित और विद्वान हुआ करती थी। विद्या, धर्म, दर्शन के प्रति उनकी बहुत रुचि होती थी। बौद्ध आगमों की शिक्षिकाओं के रूप में भी उन्होंने ख्याति प्राप्त की थी। थेरीगाथा की कवयित्रियों में 32 आजीवन ब्रहाचिरिणी और 18 विवाहित भिक्षुणियां थी। जिनमें शुभा, सुमेधा, अनोपमा उच्च वंश की कन्या थीं श्रुणी खेमा उस युग की उच्च शिक्षा प्राप्त थी जिसकी विद्धता की ख्याति दूर दूर तक फैली थी? संयुक्त निकाय से ज्ञात होता है कि सुभद्रा नामक भिक्षुणी व्याख्यान देने में प्रसिद्ध थी। राजगृह के सम्पतिशाली सेठ की पुत्री भदाकुण्डकेशा अपने विद्या और ज्ञान से सबको आकृष्ट करती थी। इसी प्रकार एक जैन पिता को चार पुत्रिया थी, भ्रमण करते हुए लोगों को दर्शनशास्त्र पर वाद विवाद करने के लिए चुनौती दी थी। जैन साहित्य से भी विदुषी महिलाओं के उदाहरण प्राप्त होते हैं। कौशाम्बी शासक की पुत्री जायन्ता ज्ञान और दर्शन में पारंगत थी।

बौद्धकालीन समाज में महिलाओं ने अनेक कार्य किए। महावंश से 18000 भिक्षुओं की और 1400 भिक्षुणियों के अर्ध्दपद प्राप्त करने की सूचना मिलती है। इस ग्रन्थ में यह भी कहा गया है कि पाटलिपुत्र की अशोककालीन तीसरी बौद्ध सभा में 1000 भिक्षुणियां हुई थी। कौशल नरेश प्रसेनजीत का भिक्षुणी क्षेमा से दार्शनिक वार्तालाप तथा श्रावक विशाख का धम्मदिन्ना से अपनी दार्शनिक शंकाओं का समाधान प्राप्त करना प्रदर्शित करता है कि भिक्षुणिया दर्शन में पारंगत होती थी। बौद्धकालीन भिक्षुणियां गूढ़ प्रश्नों पर सफलतापूर्वक संवाद कर सकती थी। भिक्षुणी शुक्ला महती सभा में ओजस्वी धर्मोपदेश देने में निपुण थी। बड़े-बड़े शासक और शासकीय अधिकारी भी विदुषी भिक्षुणियों का अभिनन्दन कर अपने को गौरवान्वित समझते थे। अमरावती से प्राप्त अभिलेखों में बौद्ध भिक्षुणियों के लिए उपाध्याय और उपाध्यायिनी शब्दों का प्रयोग हुआ है उनमें से कुछ अध्यापिकाएं होने का प्रमाण है। बौद्ध धर्म के प्रचार में महिलाओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, मौर्य सम्राट अशोक ने अपनी पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा वहां उन्होंने नरेश की बहन बनुलादेवी और पाँच सौ कन्याओं तथा पांच सौ अंत:पुर की महिलाओं को बौद्ध, धर्म में दीक्षित करके श्रीलंका में भिक्षुणी संघ की स्थापना की। बौद्ध धर्म की अन्य प्रचारिकाओं में गुट्टा, अनोपमा, सुमेधा, मल्लिका, सामावती, चाहमती, राज्यश्री , कुमारदेवी आदि प्रसिद्ध है।

मौर्य काल में पुरुष ही पण्डित नहीं होते थे. वरन अनेक महिलाएँ भी पण्डिता हुआ करती थी, पांचाल नरेश की माता इसी प्रकार की एक स्त्री थी, जो दस प्रावान विद्वानों के साथ ग्यारहवीं महत्वपूर्ण महित्य थी। हरिभपाल जातक में उल्लेख है कि बनारस के राजा द्वारा सन्यास ग्रहण कर लेने पर अमात्यों ने राजमहिर्षी से शासन संचालन का आग्रह किया था।

गुप्तकाल:

गुप्तकाल में साहित्य का बहुत विकास हुआ था जिसमें महिलाओं का बड़ा योगदान है काव्यमीमांसा में उल्लेख मिलता है कि पुरुषों के समान महिलाएं भी कवि होती थी, साहित्य के क्षेत्र में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। हाल ने दक्षिण भारतीय लेखकों और कवियों की रचनाओं का संकलन 'गाथासप्तसती' नामक ग्रंथ में किया है । जिसमें उच्च कोटि की संस्कृत कृतियों का उल्लेख देते हुए कवयित्रियों की प्रशंसा की है। राजशेखर ने अपनी रचना 'सूक्ति मुक्तावली' में इनकी प्रशंसा की है । इसमें शीलभट्टारी नामक विदुषी का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार विजयांक नामक कवयित्री की समानता कालिदास से और तुलना सरस्वती से की गई है । राजशेखर की पत्नी अवंती सुंदरी कवयित्री व विदुषी थी। वह उत्कृष्ट काव्य रचना करती थी तथा उसने स्थानीय शब्दों का एक शब्दकोश बनाया था। शंकर वह मण्डल मिश्र की पत्नी भारती थी, जो तर्क, साहित्य, वेदांत , मीमांसा जैसे विषयों की पंडित थी। अलतेकर के अनुसार 'कौमुदीमहोत्सव' नाटक की रचना विधा अथवा विज्जका नामक लेखिका ने की थी। राज परिवारों, राजकीय कर्मचारीयों, धनी संपन्न समाज में महिलाएं उच्चकोरटि की शिक्षा प्राप्त कर रही थी। इस समय में उच्च कोटि कवयित्री हुई जिसकी जानकारी संस्कृत नाटकों से होती है।

वात्सायन के अनुसार कन्याओं को 64 कलाओं में पारंगत होना चाहिए। गुप्तकाल में महिलाएँ अध्यापक का कार्य भी करती थी। वह गायन, नृत्य, चित्रकारी, गृह-सज्जा, चित्रकला, संगीत आदि कलाओं की शिक्षा प्राप्त करती थी और अपने ज्ञान से समाज को सुसज्जित करती थी। वात्सायन के कामसूत्र से यह भी स्पष्ट होता है कि महिलाएँ परिवार की आय व्याय का वार्षिक बजट बना सकती थी। संस्कृत नाटक मालविकाग्निमित्रम ने मालविका को नृत्य व गायन की शिक्षा गणदास से ग्रहण किये जाने का उल्लेख मिलता है। राजशेखर के अनुसार राजपरिवार में प्रसिद्ध कवयित्रियाँ, शीलभट्टारिका का विकलानीतम्बा, विजयानका, प्रभुदेवी और सुभद्रा आदि थीं। जिनके कार्यों ने लोगों को ज्ञानवान किया है। उस समय महिलाएँ वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेती थी। मालविका की नाट्य परीक्षा की मध्यस्थता करने वाली भी एक महिला थी जो विदर्भ के राजा माधवसेन के मंत्री सुमति की बहन थी। कालिदास के साहित्य से भी जानकारी मिलती है, कि महिलाएँ शिक्षित होकर समाज को मजबूती प्रदान करती थी। 'शाकुन्तलम' की प्रियंवदा व अनुसूया साक्षर थी, जो दुष्यन्त की अंगूठी पर नाम पड़ती है। कालिदास प्रियंवदा और अनुसूया को चित्रकला व प्रसाधन कला में प्रवीण होने का वर्णन करते है। इसी प्रकार मालती माधव में उल्लेख मिलता है कि कामन्दकी सर्वशास्त्री में निष्णात दृष्टिगत होती है। वह एक ओर तो नीति के उपदेश देती है तथा दूसरी ओर धर्मशास्र की शिक्षा देती है।

गुप्तोत्तर काल:-

गुप्त सम्राज्य के विघटन के बाद भारत में केन्द्रीयसत्ता का अभाव सा हो गया था। गुप्तोत्तर तथा राजपुत काल में महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी। किन्तु उस समय में अनेक विदुषी महिलाएँ हुई जिन्होने समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। वह शिक्षा प्राप्त करके शिक्षिका या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में अपना योगदान देती थी। कुवलयमालाकहां में भृगु की पुत्री का राजकीय शिक्षिका के रूप में उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार संन्यासिनी ऐणिका ने भी राजकीय से अक्षर ज्ञान से लेकर धर्म एवं काम विद्याओं के सभी शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया था।" इसी प्रकार सारगंधर ने शोला, विकट, नितम्बा, विज्जिका, भट्टारिका, कलगुस्तानी, मदालसा, सुभद्रा, इन्दुलेखा, पदमश्री, मोरिका, मारल, लक्ष्मी आदि कवयित्रियों का उल्लेख किया है। यह कवयित्री अपने ज्ञान से समाज को मजबूत करने में भूमिका निभा रही थी। राजपूत काल में भी अनेक कवयित्री हुई जिन्होंने समाज में अपनी पहुँच बनाई थी। परमार शासक उपेन्द्रराज

के दरवार में सीता नामक कवयित्री थी, जिसने राजा की प्रशंसा में अनेक कविताओं की रचना की थी। इसी प्रकार परमार शासक उदयादित्य के झालरापाटन अभिलेख में पण्डिता हर्षुका का नाम मिलता है। उच्च कुल में शिक्षा का प्रसार-प्रचार अधिक था।

पृथ्वीराज रासो में वर्णन मिलता है कि राजकुमारी संयोगिता ने मदना ब्राहणी द्वारा संचालित विद्यालय में अध्ययन किया था। राजकुमारी संयोगिता के साथ रजोगुण युक्त एक सौ दस छात्राएँ अध्ययन करती थी, जिसमें एक सौ पाँच विविध देश के शासको की राजकन्याएँ थी। राजा जयचन्द्र ने संयोगिता की शिक्षा व्यवस्था के लिये वृद्ध शिक्षिका को नियुक्त किया था। प्रारम्भ में उन्होंने राजकुमारी को धर्मशास्त्र और गृहविज्ञान की शिक्षा दी। युवावस्था के प्रराम्भ में शिक्षिका मदना उसके ह्रदय में सुधड़ता और पटुता की शिक्षा उतारने लगी, तत्पश्चात संयोगिता शिक्षिका के सहयोग से नियम और विनय का पाठ पड़ने लगी। आठवीं शताब्दी में लेखिका चिकित्सक रूसा की अरवी भाषा में अनुवाद की गई पुस्तक प्राप्त होती है, इस पुस्तक में धातुकर्म (मिडवाइफ) पर प्रकाश डाला गया है। इससे सिद्ध होता है कि महिलाओं की रूचि आयुर्वेद व नारी चिकित्सा में भी थी। बारहवी शताब्दी के अन्त में भास्कर द्वितीय ने अपनी पुत्री "लीलावती को गणित का अध्ययन कराने के लिये "लीलावती ग्रंन्थ" की रचना की। इसी प्रकार चौहान शासक गूवक की बहन कलावती 64 कलाओं में प्रवीण थी। राजधराने में राजकुमारी व सामंत की लड़कियों को युद्ध कौशल की भी शिक्षा प्रदान की जाती थी। हर्ष के काल में महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करती थी। निसांग के अनुसार-हर्ष की विधवा बहन राजश्री नृत्य संगीत आदि कलाओं में दक्ष थी। राजश्री बौद्ध दर्शन में पारंगत थी, तथा एक अलौकिक बुद्धिमान स्त्री थी। सुसंस्कृत उच्च परिवारों की कन्याएँ साधन उपलब्ध हो जाने के कारण सभी प्रकार की उच्च साहित्यिक कलात्मक राजनीतिक तथा युद्ध सम्बन्धी शिक्षाएँ प्राप्त कर लेती थी। तथा महिलाओं का यही वर्ग तत्कालीन महिला-समाज को गौरव प्रदान करता था।

निष्कर्ष:-

आदिकाल से ही समाज में नारी का गरिमामय व महत्वपूर्ण स्थान रहा है। महिला को जीवन की आधारशिला माना गया है। महिला को समाज में जो सम्मान मिला, वह उसकी साधना, सत्यता, सहनशीलता, सौम्यता सौष्ठव आदि सहजगुणों का ही फल है। साहित्यिक विकास में महिलाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, उन्होंने वेदों में ऋचाएँ लिखी तथा प्रत्येक कालखण्ड में अनेक पुस्तकों की रचना की तथा बड़े-बड़े ग्रंथों के संकलन में सहयोग दिया। महिलाओं ने विभिन्न विधाओं का विकास कर समाज को मजबूती प्रदान की, उन्होंने समाज के उत्थान में जो महत्वपूर्ण योगदान व त्याग दिया उसे आज का समाज कभी भूला नहीं सकता है।

सन्दर्भ सूची:

1. इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली-भाग-29, पृ० सं०- 188
2. ऋग्वेद संपादक-एफ, मैक्समूलर, 1890-92, भाग-2, मंडल 10, सूक्त-159, श्लोक-2, 3, पृ.सं.-435
3. यजुर्वेद संहिता लेखक-डॉ. नर्वदेश्वर तिवारी, प्रकाशन, परिमल प्रकाशन, दिल्ली 1988, भाग-2 अध्याय-4 श्लोक 7, पृ112
4. डॉ. मालती शर्मा-वैदिक महिलाओं में नारी, प्रकाशक-डॉ. हरिश्चंद्र त्रिपाठी, वाराणसी, संस्करण प्रथम वि सं 2048.
5. याज्ञवल्क्य स्मृति-महर्षि याज्ञवल्क्य, विज्ञानेश्वर कृत मिताक्षरा व्याकरण, हिन्दी व्याकरण-डॉ. उमेश चन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, संस्करण-5, 1994, अध्याय-2, प्रकरण 4 श्लोक-१ पृ०सं०-61
6. डॉ० सुषमा शुक्ला-वैदिक वाड्मय में नारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृ०सं०-35
7. विष्णु पुराण-घनश्यामदास, गीता प्रेस गोरखपुर, 1990, प्रथम संस्करण, अंश-4, अध्याय-8, श्लोक-17, पृ०सं०-116
8. रामायण-अनुवाद-प्रयागनारायण भार्गव, मलिक नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1966, काण्ड-3, अध्याय-5, रतांक-16. पृसं०-261

9. थेरीगाथा-अनुवादक, डॉ. शेषराव मेश्राम, प्रकाशक-महाराष्ट्र राज्य साहित्य एवं संस्कृति बोर्ड, मुंबई, 1993, कक्षा-4 निपत 7. पृ.0-29
10. महावंश-अनुवादक, भदंत आनंद कौस्क्यायन, प्रकाशन हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1942, परिच्छेद-2 श्लोक-7, पृ.सं.-10
11. कश्यमीमांसा-राजशेखर, व्याख्याकार डॉ.गंगासागर राय चौखम्भा भवन वाराणसी 2013,आध्याय-7 पृ.सं.-62
12. कर्पूरमंजरी-महाकवि श्री राजशेखर, सम्पादक श्री रामकुमार आचार्य, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2012, जवनिका-5, स्लोक-17. पृठ-159
13. कामसूत्रम-वात्स्यायनमुनि, सम्पादक श्री गोस्वामी दामोदर शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, बनारस, 1929, अधिकरण-4. अध्याय-2, प्रकारण-21 श्लोक-3. पृ०सं०-232
14. प्रवन्धचिन्तामणि-श्री मेरुतुडाचार्य, अनुवादित पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्रकाश-5, प्रकरण 90, पृ. 7-186
15. अभिज्ञानशाकुंतम-कालिदास, संपादित डॉ. शिवराजशास्त्री, मेहर चंद्र लक्ष्मणदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1963, अध्याय-5, सूत्र-11 पृ. क्रमांक-53